ज्ञानगीत तरंग

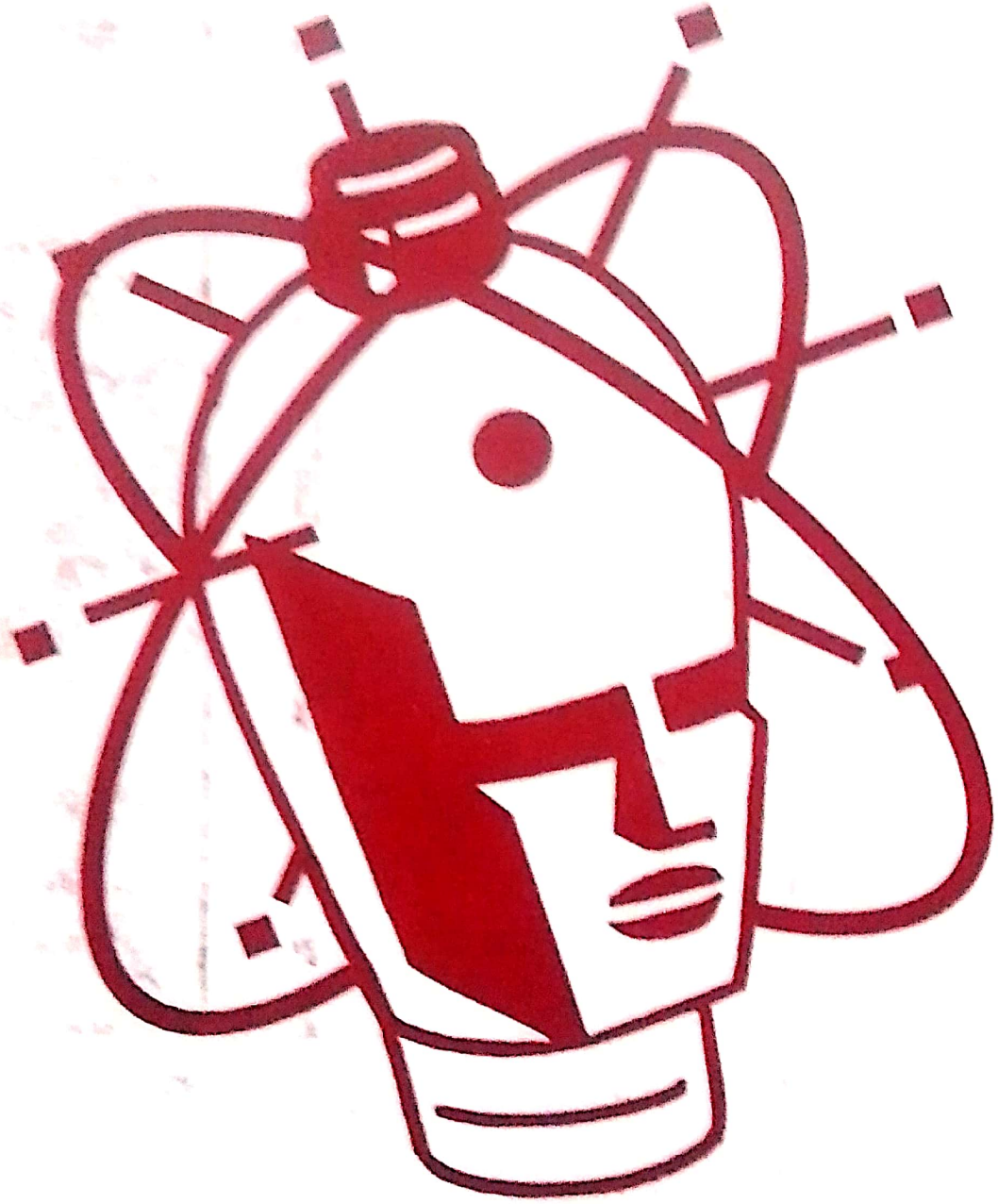

प्रणेता–रमाशंकर मिश्र

Scanned with OKEN Scanner

स्वत्वाधिकारी– रमाशंकर मिश्र

संस्करण– प्रथम सन् 2009

प्रकाशक– रमाशंकर मिश्र
(निवर्तमान प्रधानाचार्य
बबेरू–बाँदा (उ0प्र0)।

मूल्य– पंचानबे रुपये। (95/–)

मुद्रक– **कुशवाहा प्रिंटिंग प्रेस**
बबेरू (बाँदा) उ० प्र०।

GYANGEET TARANG by Ramashankar mishra

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

रचनायें, विशेष	अ, ब
प्राक्कथन	य
ज्ञानगीत तरंग का वागार्थ (डा0 चन्द्रिकाप्रसाद दीक्षित 'ललित')	ल
ज्ञानगीत तरंग (समीक्षा) (डा0 ज्ञानप्रकाश तिवारी)	ष
1. विश्ववंद्या नारी	1
2. करुण दृश्य	4
3. सत्संगति से सद्गुण बढते	7
4. हो चित्त सतत् भगवान्–ओर	10
5. भव सुख–दुख	12
6. मधुमास	16
7. मानव–शरीर–रचना	20
8. है अहंकार ही शत्रु सतत	22
9. हो जाता जीवन सुखद सफल	23
10. कितना निन्दात्मक वर्तमान	26
11. गुड फ़ाइडे	27
12. कैसी चुनाव की यह वेला	29
13. प्रभात–संध्या	31
14. कैसा चरित्र का ह्रास अरे !	33
15. सर्वत्र चोर लम्पट रहते	35
16. कैसा विचित्र कलयुग कलियुग !	37
17. आचरण धर्ममय सुख देता	39
18. छिप गये कहाँ वे दिन स्वर्णिम	42
19. होता मानव–विकास जग में	44
20. शिक्षा अतीत से ग्रहण करो	46
21. जीवन का वसंत तरुणायी	48
22. भारत में बिखरे बहु मुद्दे	50
23. नारी है वसुधा का वैभव	53

Scanned with OKEN Scanner

24. जब तक वैराग्य न भोगों से 55
25. यौवन को भटकन से रोको 57
26. वास्तविक पिता निज परमेश्वर 58
27. पतनोन्मुख करता अहंकार 60
28. है आत्मशक्ति भरती प्रकाश 62
29. सामाजिक न्याय कहाँ सोया ? 64
30 घट रहा सलिल सरिताओं का 65
31. ब्रह्मा शिव आये कृष्ण–पास 68
32. निज चरण–धूलि दो पूज्य राम 70
33. ब्रह्म श्रुति में वर्णित प्रत्यक्ष 72
34. सुख भोग–पदार्थ क्षणिक देते 73
35. देवत्व–मधुरता पूर्ण भक्ति 75
36. सब राजमार्ग राष्ट्रीय बने 77
37. परमात्मा पर विश्वास करो 79
38. विधवा को सतत कष्ट मिलता 80
39. धार्मिकता अन्तःकरण शुद्ध 82
40. तप त्याग मूर्ति माता जग में 84
41. मन की गति अति अद्भुत अपार 85
42. परमार्थ श्रेष्ठतर भूतल पर 86
43. उसने आवाज दी 87
44. जीवन में भूलें करता नर 88
45. इस भाँति पनपती मानवता 89
46. अब चलो चलें संसार छोड 90
47. कितने विस्मय का कृत्य अरे ! 91
48. भगवान–कृपा के पात्र बनें 92
49. कैसी अनुचित यह परम्परा 94
50. मैं कहता हूँ मुझको मानो 95
51. समझो श्रीराम–श्याम–जीवन 97
52. संसार–सिन्धु को पार करो 101

Scanned with OKEN Scanner

रचनायें

महाकाव्य

1. स्वामी विवेकानन्द (प्रकाशित)
2. भीष्म पितामह (प्रकाशित)
3. लवकुश (प्रकाशित)
4. साध्वी दौपदी (प्रकाशित)
5. महासती अनसूया (प्रकाशित)
6. महानारी मदालसा (प्रकाशित)
7. भगिनी निवेदिता (प्रकाशित)
8. धर्मराज युधिष्ठिर (प्रकाशित)
9. भक्त प्रवर सम्राट् ध्रुव (प्रकाशित)
10. विप्रवीर परशुराम (प्रकाशित)
11. भक्त सम्राट् प्रह्लाद (प्रकाशित)

कविता संग्रह

1. अंतर्यात्रा (प्रकाशित)
2. सरस स्वर (प्रकाशित)
3. प्रयोगवादी आयाम (प्रकाशित)
4. विविध–भाव तरंगें (प्रकाशित)
5. नयी कवितायें (प्रकाशित)
6. नवीन भावगीत (प्रकाशित)
7. ज्ञानगीत तरंग (प्रकाशित)

खण्ड काव्य

1. सुलोचना का सतीत्व (प्रकाशित)
2. महादेवी राज्यश्री (प्रकाशित)
3. डा0 ऐनीबेसेण्ट (प्रकाशित)
4. राजर्षि मांधाता (प्रकाशित)
5. इन्द्राणी (प्रकाशित)

Scanned with OKEN Scanner

रचनायें

महाकाव्य

1. स्वामी विवेकानन्द (प्रकाशित)
2. भीष्म पितामह (प्रकाशित)
3. लवकुश (प्रकाशित)
4. साध्वी दौपदी (प्रकाशित)
5. महासती अनसूया (प्रकाशित)
6. महानारी मदालसा (प्रकाशित)
7. भगिनी निवेदिता (प्रकाशित)
8. धर्मराज युधिष्ठिर (प्रकाशित)
9. भक्त प्रवर सम्राट् ध्रुव (प्रकाशित)
10. विप्रवीर परशुराम (प्रकाशित)
11. भक्त सम्राट् प्रह्लाद (प्रकाशित)

कविता संग्रह

1. अंतर्यात्रा (प्रकाशित)
2. सरस स्वर (प्रकाशित)
3. प्रयोगवादी आयाम (प्रकाशित)
4. विविध–भाव तरंगें (प्रकाशित)
5. नयी कवितायें (प्रकाशित)
6. नवीन भावगीत (प्रकाशित)
7. ज्ञानगीत तरंग (प्रकाशित)

खण्ड काव्य

1. सुलोचना का सतीत्व (प्रकाशित)
2. महादेवी राज्यश्री (प्रकाशित)
3. डा0 ऐनीबेसेण्ट (प्रकाशित)
4. राजर्षि मांधाता (प्रकाशित)
5. इन्द्राणी (प्रकाशित)

Scanned with OKEN Scanner

नारी है वसुधा का वैभव

नारी है देह नहीं केवल,
व्यक्तित्व श्रेष्ठ सत्ता सुरभित।
जिसमें आकार लिया करता,
शुभ सत्य सनातन हो गर्वित।।

जिसका साहचर्य पुरुष के हित,
जीवन की सुघर पूर्णता है।
यह सतत प्रवाहित जल धारा,
नित कर्मरूप की क्षमता है।

जीवन की धरती को उर्वर,
शीतल, रससिक्त किया करती।
प्रतिमा यह धैर्य सुकोमलता,
अभिव्यक्ति समर्पण रंग भरती।।

जीवन का रंग इसी में है,
उल्लास भरी जीवन–तरंग।
मानव–पतंग की डोर यही,
नभ उच्च ओर बढती अभंग।।

इसके संतुलन मात्र से ही,
नर प्रगति पंथ पर है बढता।
जीवन को उन्नतिशील बना,
निर्द्वन्द्व उँचाई पर चढता।।

इसकी सहयोग–भावना से,
है असंभाव्य भूपर संभव।
निज संस्कृति का साकार रूप,
नारी है वसुधा का वैभव।।

Scanned with OKEN Scanner

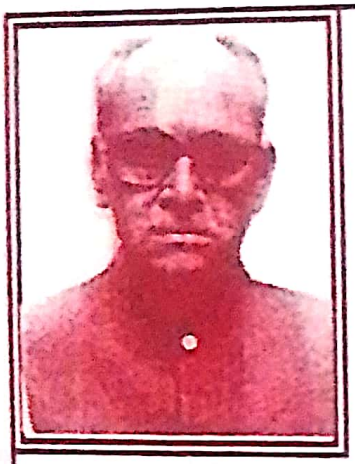

कवि की जीवन रेखा

नाम	– रमाशंकर मिश्र ।
पिता	– वैद्य स्व0 श्री रामकृष्ण मिश्र शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य (कान्यकुब्ज ब्राह्मण, बैजे गाँव के मिश्र) ।
माता	– स्व० श्रीमती सुन्दर देवी मिश्रा ।
धर्मपत्नी	– श्रीमती शैल कुमारी मिश्रा ।
जन्म तिथि	– भाद्र कृष्ण पक्ष चतुर्दशी संवत् 1991 ।
जन्म स्थान	– दारागंज, प्रयाग (उ0 प्र0) ।
पिता का जन्म स्थान	– यमुना तट पर स्थित ग्राम समगरा–मर्का (बाँदा) ।
पिता का निवास स्थान	– सर्वप्रथम कतिपय वर्ष दारागंज, प्रयाग एवं तत्पश्चात कर्वी (चित्रकूट) उ0प्र0 ।
शिक्षा	– एम.ए. (अंग्रेजी) इलाहाबाद विश्वविद्यालय, एम.ए (हिन्दी) आगरा विश्वविद्यालय, साहित्य रत्न (हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग), एल.टी. (सेवाकालीन) के.पी. ट्रेनिंग कालेज इलाहाबाद ।
स्थायी आवास	– साहित्य सदन, बबेरू (बाँदा) ।
सेवा स्थल	– श्री जे.पी. शर्मा इण्टर कालेज, बबेरू (बाँदा) में प्रवक्ता एवं प्रधानाचार्य के रूप में अगस्त 1957 से जून 1995 तक कार्यरत रहे ।
वर्तमान पता	– रमाशंकर मिश्र, निवर्तमान प्रधानाचार्य, साहित्य सदन, बबेरू जनपद बाँदा (उ0 प्र0) । मो : 9415569875, 9451850833

मुद्रक: कुशवाहा प्रिंटिंग प्रेस बबेरू (बाँदा) उ.प्र.

Scanned with OKEN Scanner